E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(1): 246-247
Received: 13-11-2019
Accepted: 19-12-2019

विजय शंकर पंडित
गवेषक, विश्वविद्यालय
मैथिली–विभाग, ललित नारायण
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत

Corresponding Author:
विजय शंकर पंडित
गवेषक, विश्वविद्यालय
मैथिली–विभाग, ललित नारायण
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत

मैथिली कथा साहित्यमे लिलीरेक योगदान

विजय शंकर पंडित

सारांशः
लिलीरेकें कथा कहऽ अबैत छन्हि। हिनक कथा कहवाक शैली शास्त्रीय संगीत पर आधारित रहैत अछि। राग–रागिनीक राग–ताल आ लयमे निवद्ध हिनक कथा क्रमिक आरम्भ होइत अछि, बढ़ैत जाइत अछि आ पाठक–पाठिकाक प्राण चेतनाकें सम्मोहित कऽ लैत अछि। हिनक कथामे चित्रात्मक वर्णन भेटैत अछि। जेना लिलीरे जखन भोजनक चर्चा करैत छथि तँ मात्र भोजन कहिकऽ नहि निकलि जाइत छथि। ओ भनसाघरक सेहो चर्चा करैत छथि। चुल्हा–चौकीक गप्प सेहो करैत छथि। तरकारी तीमन, मसाला, भनसाघरमे सासु पुतोहुक आ दियादनीक गप्प करैत छथि। बहिनदाइ, भौजी, बेटी–भतीजी सभक गप्प करैत छथि। एहि तरहें ई अपन कथाक माध्यम सँ रोचक तथ्य प्रस्तुत करबामे सक्षम भऽ जाइत छथि। लिलीरे कठिनसँ कठिन बात कहैत छथि मुदा कहबाक ढंग तेहन ललितगर होइत छन्हि जे हिनक कथा अन्यन्त चर्चित आ लोकप्रिय भऽ जाइत छन्हि। हिनक कथामे उत्सुकता बनल रहैत अछि। उत्सुकता क्रमिक बढत जाइत अछि। बीच–बीचमे रसक वर्षा करैत जाइत छथि। लोक जतबाकाल हिनक कथा पढेत रहैत अछि, दिन दुनियाँ बिसरि जाइत अछि। हिनक कथाक अन्त स्वाभाविक रूपमे होइत अछि। कतहु कोनो चमत्कार नहि। कतहु कोनो नाटकीयता नहि। सहज स्वाभाविक रूपमे कथाक अन्त होइत छैक। ई कथामे कतहु झुठ बात नहि लिखैत छथि। हिनक कथ्य, कथानक, पात्र, वातावरण सबटा हिनक अप्पन जीयल, देखल, भोगल रहैत छन्हि। यैह कारण अछि जे हिनक कथा विश्वसनीय होइत अछि।

प्रस्तावनाः
आलोच्यकालसँ पूर्व मैथिली कथा जेना कथावस्तु, चरित्र चित्रण, मानसिक द्वन्द्व आदिक स्थितिक विचार नहि रखितो साधारण वर्णनात्मक शैलीमे पाठक लोकनिक जिज्ञासा 'आगू की भेलैक'क पूर्ति करबामे अभिरूचि प्रदर्शित करैत छल नीति, व्यवहार तथा जीवनक स्थूलपर सारपूर्ण घटना संवलित व्यापार तथा मनोगत भावक साहाय्यें कलात्मक रूपसँ कथा कहि पाठक लोकनिक मनोरंजनक संग–संग नीति, धर्म वा जीवनक कोनो एकटा सत्य विशेष वा रहस्य विशेषक उद्घाटन, प्रतिपादन अथवा प्रचार करबाये अपन कर्तव्यक इतिश्री बूझैत छल, से स्थिति आब नहि रहल। सम्प्रति 'कथा'क क्षेत्र अतीतमे 'की भेल छल'क स्थानपर हमरा लोकनिक बाह्य आओर आन्तरिक जीवनमे की भ' रहल अछि' 'कोना भ' रहल अछि' तथा 'किऐक रहल अछि' आदि भ' गेल अछि। एकर कारण अछि जे पाठकक जिज्ञासा सेहो परिवर्तन आबि गेल अछि। आइ पाठक 'कथा'क माध्यमसँ जीवन मर्मक गँहीरसँ गँहीर अनुभूति आओर अभिव्यक्ति प्राप्त करय चाहैत छथि। वस्तुतः आलोच्यकालक कथाक उद्देश्य, कथावस्तु, रचना तन्त्र, शैली शिल्प आदि सभ किछु अत्यन्त परिवर्तित अवस्थामे अछि।[1]
लिलीरेक कथाक विश्लेषणसँ पूर्व कथाक परिभाषा, शिल्प ओ शैली, रचना प्रक्रिया, कथ्य ओ कथानक एवं कथाक तत्व आदिक विश्लेषण अपेक्षित अछि। डॉ० दिनेश कुमार झाक कथाक प्रसंग कएल गेल विचार तर्कपूर्ण, समीचीन ओ प्रभावी अछि। अतएव कथाक प्रसंग डॉ० दिनेश कुमार झाक किछु महत्वपूर्ण विचार एतय प्रस्तुत कएल जाइत अछि–[2]
आलोच्यकालक 'कथाकें परिभाषित करब अत्यन्त कठिन अछि कारण प्रवहमान जीवनक सदृश जीवन कोनो मार्मिक घटना, मनोगत भावना, अनुभव अथवा सत्यकें चयन तथा अतिरंजनक कलात्मक रीति सँ. संक्षेपमे प्रतिबिम्बित कयनिहार कथामे अत्यधिक बैविध्य आबि गेल अछि। आइ कथाक सभसँ पैघ परिभाषा इएह अछि जे ई कथा अछि, गल्प नहि अछि, मात्र घटनाक चित्रण नहि अछि, रेखाचित्र नह अछि, उपन्यास नहि अछि आओर नाटक सेहो नहि अछि। 'कथा' गल्प नहि अछि कारण गल्प एकटा सरल विवरण मात्र नहि होइत अछि। 'हम पटनासँ दरभंगा गेलहुँ–एहि यात्राक विवरण मात्रकें कथा नहि कहल जा सकैत। मुदा एहि यात्राकें कलाकार 'कथा'क रूप द' सकैत छथि, ई यात्रा कथा उपकरण बनि सकैत अछि। कहबाक तात्पर्य ई जे जीवनमे जे घटना घटित अछि तकर यथातथ्य क्रमबद्ध विवरण मात्र 'कथा' नहि भ' जाइछ, लेखककें एहि विवरणमेसँ सार्थक प्रसंगक चयन क' ओकरा 'कथा'क रूपमे प्रस्तुत करय पडैत छनि। अतः कथा मात्र घटना अथवा वार्तालापक यथातथ्य अंकन नहि अछि, ने मात्र चुटकुला आदि जे सुना देलहुँ आओर हास्यक उद्रेक भ' गेल। चुटकलामे कथावस्तु जटिल उद्घाटन तथा नाटकीय प्रभाव असम्भव अछि। कथा 'रेखाचित्र' सेहो नहि अछि कारण रेखाचित्रमे कोनो चित्रक अंकन प्रधान होइत अछि मुदा 'कथा' मे पृष्टभूमिक चित्र कार्य

व्यापारक संघटन एवं विकासक हेतु आवश्यक रहैत अछि, अतः ओकर स्थान गौण होइत अछि। ई कार्य व्यापार अनिवार्यतः बाह्य स्थूल जीवनसँ सम्बन्धित रहय, से आवश्यक नहि अछि। 'कथा' अपन घटना विन्यास तथा कार्य व्यापारक उद्घाटनक हेतु मनुष्यक मानसिक अन्तद्वन्द्वकें सेहो ओतबे सफलतापूर्वक चयन क' सकैत अछि। 'कथा' उपन्यास नहि अछि कारण उपन्यासक क्षेत्र समग्र जीवन होइत अछि तथा मनुष्यक समग्र जीवनमे सँ कोनो एकटा मार्मिक घटनाकें अपन विषय बनबैत अछि। एहिना 'कथा' नाटक सेहो नहि अछि यद्यपि 'कथा मे नाटकीय तत्त्व रहैत अछि तथा कोनो निर्णायक घटना सूत्रक दिस 'कथा'क कथा अनुधारित रहैत अछि। नाटकक कथाकें मूलतः नाटकीय होयबाक आवश्यकता रहैत अछि तथा नाटककारकें मात्र 'संवाद'क द्वारा कार्य व्यापारक विकास तथा कथानक उद्घाटन करय पडैत छनि। किन्तु कथाकार 'कथा'कें अपन उद्देश्यक अनुरूप जतय चाहथि, मोड़ि सकैत छथि तथा घटना एवं पात्रकें वातावरणक पृष्ठभूमिक सूक्ष्म प्रभावसँ जेना चाहथि, उभाड़ि सकैत छथि।[3]

अतः 'कथा' की अछि से बुझबाक हेतु कोनो सरल परिभाषा आश्रय ग्रहण करबाक आवश्यकता नहि अछि। तथापि एतवा कहल जा सकैत अछि जे सम्प्रति 'कथा' सूक्ष्म स्थितिक परिवेशमे, क्षणिकसँ क्षणिक मानसिक उहापोहमे, क्षुद्रसँ क्षुद्र अनुभूतिक आवेगमे मांसल स्वरूप ग्रहण करबाक क्षमता सम्पन्न एकटा लोकप्रिय गद्य विधा अछि। जहिना पहिने कथानक, चरित्र आओर चरम स्थिति कोनो श्रेष्ठ कथाक हेतु आवश्यक बूझल जाइत छल तहिना आब ओकर स्थानपर वातावरण अथवा परिवेश, मनःस्थितिक बिन्दु विशेष, कथ्य ओ प्रभाव कोनो श्रेष्ठ कथाक तत्त्व भ' गेल अछि। समाजिक असामनता, जीवनक यथार्थ मूलक अवमूल्यन पारिवारिक छिन्न–भिन्न, सभ प्रकार सम्बन्धमे अनास्था भाव, सामाजिक उधार शिलाक विकेन्द्रीकरण, राजनीति प्रपंच, प्रशासनिक अकर्मण्यता, बेकारी, भ्रष्टाचार–इएह हमरा लोकनिक परिवेश अछि तथा एकरे आस–पास साम्प्रतिक 'कथा' धूमैत अछि। एहन परिवेशमे आजुक 'कथा'क कथानक बाहर नहि घटैत अछि, व्यक्तिक भीतरमे घटित होइत अछि कारण साम्प्रतिक 'कथा' जीवनके छूबि क' नहि छोड़ि दैत अछि, ओकरा उनटा पुनटा क' देखैत अछि।[4] एहि क्रममे आजुक कथा लोकक मनक अन्हार गुफामे पैसि ओतुक्का ओझरायल गीरहक पता लगबैत अछि। एहिमे यद्यपि चरित्रक छिन्ने अंश प्रस्फुट होइत अछि तथापि ओहि आधार पर व्यक्तिके चीन्हल जा सकैत अछि। तखन आजुक कथाक श्रेष्ठता ओकर समग्र प्रभावक अंकनपर सेहो निर्भर करैत अछि। किन्तु सर्वोपरि अछि कथाकार जीवनानुभव, संवेदनशीलता, सूक्ष्मदर्शिता तथा सत्यान्वेषी दृष्टि जकर अनुसार ओ. साधारण घटनाक मध्यसँ अर्थवान एवं मार्मिक प्रसंगक चयन क' ओकरा तेहन कलात्मक रूपमे उपस्थित करैत छथि जे पाठककें मनोरंजन प्रदान करबाक संग हुनक चेतनाकें स्फूर्ति प्रेरणा प्रदान करैत छनि तथा हुनक संवेदनाकें जीवनक कोनो सत्यक अनुभूति कराय विशेष मानवीय एवं समृद बनबैत छनि।[5]

निष्कर्ष:

स्वतंत्रताकालीन मैथिली कथा सेहो कालोचित परिवर्तनकें आत्मसात कयने, कौतूहल तथा घटना–चमत्कार परित्याग क' समकालीन जीवन सूक्ष्मसँ सूक्ष्म तथा कटुसँ कटु सत्यक व्यंजना हेतु मनोवैज्ञानिक आधारसँ युक्त समकालीन चरित्रक सूक्ष्मताक उद्घाटन करैत एकटा सर्वथा नव आकृतिक संग मैथिली पाठकक समक्ष प्रस्तुत भेल अछि। यथार्थ दृष्टिक जीवन्त स्पर्शसँ युक्त समकालीन सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था, समाज व्यवस्था, राजनीति, धर्म न्याय, रूढ़ि, रीति आदिक मार्मिक महत्वपूर्ण एवं गलित अंश एहि कालक उत्कृष्ट मैथिली कथाक शब्दमे बाजि रहल अछि। जे तथ्य संवेदनाक घनीभूत तापक संग उपन्यासमे नहि कहल जा सकैत छल से आलोच्यकालक कथा सभक केन्द्रीय वर्ण्य वस्तु बनि धनीभूत प्रभावक संग अपन अस्तित्व जीवंत बोध पाठककें करबैत अछि।

संदर्भ सूची:

1. रमानन्द झा 'रमण', मैथिली कथाक समाज भाषा एवं शिल्प, 2016, चेतना समिति, पृ०– 30
2. तथैव, पृ.– 32
3. लिलीरे, रंगीन परदा, 2014, साहित्यिकी प्रकाशन, सरिसब पाही, पृ.– 36
4. विश्वनाथ, युगान्तर, 2001, मैथिली रचना मंच, दरभंगा, पृ.– 162
5. तथैव, पृ.– 164